प्रधानमंत्री द्वारा संसद की कार्यवाही के उपग्रह प्रसारण के आरंभ होने पर दिया गया अभिभाषण

14 दिसम्बर, 2004
नई दिल्ली

''यह हम सभी के लिए महान गौरव का विषय है कि हम आज से अपनी संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण उपग्रह के जरिए होना आरंभ कर रहे हैं । यह बहुत ही अच्छा अवसर है कि इस कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद हम सबसे पहला भाषण जो देखेंगे वह स्वतंत्रता प्राप्ति की भोर में पंडित नेहरू जी द्वारा दिए गए ऐतिहासिक भाषण की रिकार्डिंग होगा । राज्य सभा, लोक सभा के लिए तथा हमारे लोकतंत्र के लिए सामूहिक रूप से आज का दिन महत्वपूर्ण है । हमारी संसद की कार्यवाही का यह नियमित तथा दैनिक प्रसारण हमारे नागरिकों तथा विदेशों में रहने वाले लाखों लोगों को भारतीय लोकतंत्र के कामकाज करने के तौर-तरीकों को निकट से देखने एवं समझने में समर्थ बनाएगा ।

भारत में लोगों ने संसदीय लोकतंत्र की संस्थाओं में अपना विश्वास होने को बार-बार तथा नियमित रूप से व्यक्त किया है । हमारे लोकतंत्र की जड़ें हमारे राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में ही इतनी गहरी जम चुकी थीं जिससे वह आम जनता का आंदोलन बन गया । इसमें कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रों के समुदाय में हमारी महत्वपूर्ण स्थिति होने का एक महत्वपूर्ण कारण लोकतंत्र के मूल्यों तथा सिद्धांतों के प्रति हमारी दृढ़ आस्था का होना है ।

हमारे जैसे इतने अधिक विशाल, विविधतापूर्ण, विषमतापूर्ण तथा युगों-पुरानी मान्यताओं, रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं वाले देश, जिसने लोकतंत्र की पद्धतियों तथा संस्थाओं को सम्मान प्रदान किया है, यह भारतीय आमजनों की विशिष्टता तथा हमारे गणतंत्र के संस्थापकों के प्रति किया गया महान योगदान है । स्वाभाविक रूप से हम सभी को इस समृद्ध विरासत पर गर्व है ।

किंतु, हमें अनिवार्य रूप से हर समय यह याद रखना चाहिए कि लोकतंत्र का अर्थ पांच वर्ष में एक बार सरकार चुनने के लिए वोट देने तक ही सीमित नहीं है । यह हमारे संविधान के मूल्यों तथा सिद्धांतों तथा अधिकारों एवं कर्त्तव्यों, जो हमारे सभी नागरिकों को, संविधान द्वारा प्रदत्त किए गए हैं, को सम्मान देना भी है । लोकतंत्र का अभिप्राय आम लोगों से है क्योंकि यह उन्हें गरिमापूर्ण तथा आत्म-सम्मानपूर्ण जीवन जीने के लिए समर्थ बनाता है । यह लाखों-करोड़ों निर्धन तथा बेसहारा लोगों को अधिकार प्रदान करता है ।

संसद तथा हमारे राज्यों के विधान मंडल हमारे लोकतंत्र के आधार हैं तथा इन सदनों में ही लोगों की समस्याओं को सबसे बेहतर ढंग से सुना जाता है तथा सबसे उचित ढंग से उनका समाधान किया जाता है । अपने लोकतंत्र की महान संस्थाओं का सम्मान करना हम सभी का कर्त्तव्य है । मैं यह विश्वास करता हूँ कि यदि संसद की कार्य-प्रणाली सुनिश्चित रूप से सामान्य रूप से और नियमित रूप से चले और कुल मिलाकर संविधान की मूल भावना और लोगों के मन की आकाँक्षाओं को आदर मिले, तो हमारी यह भावना स्वीकार होने के लिए हम अनुगृहीत रहेंगे ।

मैं वास्तविक रूप से आशा करता हूँ कि यह सीधा प्रसारण संसद में वाद-विवाद की गुणवत्ता में सुधार करेगा तथा अधिक से अधिक संसद सदस्यों को इसकी कार्यवाही में और अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेगा ।

यह उन निर्णयों जिन्हें हम लेते हैं तथा उन निर्णयों, जिन्हें हम नहीं ले पाते हैं, से संबंधित कारणों, प्रत्येक समस्या के सकारात्मक तथा नकारात्मक पहलुओं के बारे में लोगों को पूर्णतया शिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण साधन भी होगा, ताकि हम मतदाताओं को सूचनाओं से भरपूर तथा उत्तरदायी बना सकें ।

हम संसद की कार्यवाही को उपग्रह द्वारा प्रसारण करके संसद को अपने देश के दूरस्थ भागों में रहने वाले अपने सभी नागरिकों के न केवल और अधिक करीब ले जाएंगे, बल्कि इससे हमारे लगभग सभी पड़ौसी देशों में रहने वाले लोगों को स्वयं ही भारतीय लोकतंत्र की कार्यशैली तथा जीवंतता को देखने में भी सहायता मिलेगी । मैं वास्तविक रूप से आशा करता हूँ कि इस प्रसारण से हमारे पड़ौसी देशों में और अधिक आत्मविश्वास तथा भरोसा जगाने में सहायता मिलेगी तथा वे एक अरब भारतीय लोगों की आशाओं, आकाँक्षाओं तथा उत्कंठाओं का बेहतर मूल्यांकन करेंगे । भारत अपने पड़ोस में शांति तथा सुरक्षा चाहता है ताकि हम भविष्य में प्राप्त सम्पन्नता को अपने पड़ोसी देशों के साथ बांटने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर सकें।"

जय हिंद ।